A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

# पारंपरिक हिमाचली लोकवाद्य गुज्जू की वादन तथा निर्माण विधि

**Dr. Mritunjay Sharma[1], Chiranji Lal[2]**

1 Assistant Professor & PI, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summer Hill, Shimla
2 Research Assistant, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summer Hill, Shimla

Read the Article Online

Cite this Article

Published on 30 April, 2026

Sharma, M., Lal, C. (2026). Paramparik Himachali Lokvadya Gujju ki Vadan Tatha Nirman Vidhi. Swar Sindhu, 14(1), 12-17.

OPEN ACCESS CC BY

**सारांश**

*हिमाचल प्रदेश देवी-देवताओं से संपन्न होने के कारण देवभूमि के नाम से जाना जाता है। यह अपनी लोक संस्कृति और परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त, यह पूरे विश्व में मंदिरों, मेलों, लोक गायन, वादन और नृत्य के लिए प्रसिद्ध है। मानव समाज का सबसे पुराना रूप लोक संगीत है। यह संगीत लोगों द्वारा लोगों के लिए गाया जाता है। हिमाचल प्रदेश में लोकगीत, लोकनृत्य और लोकताल का विशेष महत्व रहा है। लोकवाद्यों के बिना कोई भी लोकगीत या लोकनृत्य संभव नहीं है। ऐसी पारंपरिक लोक वाद्य यंत्रों को हिमाचल प्रदेश के लोक संगीत में विभिन्न अवसरों पर बजाया जाता है, जैसे शुभ अवसर, मेले, उत्सव, देव कार्य आदि। हिमाचल प्रदेश का एक प्रमुख लोक वाद्य गुज्जू है, जिसे मांगलिक अवसरों पर प्रमुखता से बजाया जाता है। यह वाद्य बहुत पुराना माना जाता है और इसे हिमाचल प्रदेश के स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाया जाता है। इस वाद्ययंत्र को प्राचीन काल से भगवान शिव से जोड़ा गया है। ये कारीगर इसे स्थानीय सामग्री जैसे विभिन्न प्रकार की लकड़ी, चमड़ा, रस्सी आदि की सहायता से बनाते हैं। ये कारीगर पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला को सीखते हैं। इस वाद्य का निर्माण अपने आप में एक कठिन और मेहनती कार्य है। इसे हाथों से बारीकी से बनाया जाता है ताकि इसकी ध्वनि मधुर हो सके। इस वाद्ययंत्र के साथ शहनाई वादन किया जाता है; इसे शिवरात्रि की संध्या पर बजाने के अलावा, पहाड़ी लोग मनोरंजन और शादी समारोहों में भी बजाते हैं। आकार में यह वाद्ययंत्र आमतौर पर छोटा और अंदर से खोखला होता*

***मुख्य शब्द:*** *हिमाचली लोकवाद्य, गुज्जू, वादन शैली, लोक संगीत*

## भूमिका: लोकवाद्य गुज्जू का परिचय

हिमाचल प्रदेश में बहुत लंबे काल से कई संगीत वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल किया जाता है, गुज्जू वाद्य उन वाद्य में से एक है। हिमाचल प्रदेश से संबंधित यह एक विख्यात पहाड़ी संगीत वाद्ययंत्र है। चमड़े के प्रयोग के कारण इसे अवनद्ध वाद्यों की शृंखला में रखा गया है ।इस वाद्ययंत्र को प्राचीन काल से ही भगवान शिव से जोड़ा जाता है। इस वाद्ययंत्र के साथ शहनाई नामक वाद्य का वादन किया जाता है इस वाद्ययंत्र को शिवरात्रि की संध्या पर बजाने के अलावा, पहाड़ी लोग इसे मनोरंजन के लिए भी बजाते हैं और शादी के समारोहों में भी बजाते हैं।आकार में यह वाद्य यंत्र आमतौर पर छोटा और अंदर से खोखला होता है। छड़ी की मदद से इस वाद्ययंत्र का वादन किया जाता है तथा महाशिवरात्री के अलावा भी इस वाद्य यंत्र का वादन अन्य उत्सवों में किया जाता है।

## गुज्जू वाद्य की वादन शैली तथा वादन अवसर

गुज्जू वाद्य वर्तमान काल में विलुप्त होता जा रहा है और इस वाद्य का वादन करने वाले लोगों की संख्या बहुत कम हो रही है। मुख्य रूप से इस वाद्य को हिंदी महीने की शुरुआत के दिन अर्थात संक्रांति के दिन द्वारा घर-घर जाकर कलाकारों द्वारा वादन किया जाता है। साथ ही विभिन्न मांगलिक कार्यों में इस वाद्य का वादन किया जाता है। इस वाद्य का एकल वादन भी किया जाता है तथा साथ ही अन्य वाद्यों के साथ भी इसका प्रयोग होता है। इसके चार बाज या शैलियां प्रमुख हैं जिन्हें पहला, दूसरा, तीसरा तथा चौथा बाज कहते हैं।

उदाहरण के लिए पहला तथा चौथा बाज 8 मात्रा का है दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं फुकु। दूसरा बाज 12 मात्रा का है दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं फुकु। तीसरा बाज 11 मात्रा का है दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं फुकु दऊं। पूजा के अवसरों पर इस

वाद्ययंत्र का वादन मुख्य रूप से किया जाता है। प्राचीन काल में इस वाद्ययंत्र का प्रयोग रण भूमि में भी किया जाता था। जहां इसका प्रयोग सैनिकों को कोई सूचना देने या उनमें वीर रस का प्रसारण करने के लिए किया जाता था।

## गुज्जू निर्माण से पूर्व किए जाने वाले संस्कार

इस संगीत वाद्ययंत्र का सम्बन्ध भगवान शिवजी से माना जाता है। जिस कारण इस वाद्ययंत्र के निर्माण प्रक्रिया में शुद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है । जिस दिन इस वाद्य यंत्र का निर्माण कार्य शुरू किया जाता है उस दिन निर्माता सुबह जल्दी उठता है और स्नान करने के बाद वह संगीत वाद्ययंत्र बनाने के लिए जरूरी औजारों के साथ भगवान शिव की उपासना करता है । उपकरणों की पूजा करने से यह माना जाता है कि वाद्य यंत्र बनाने की कार्यविधि बिना किसी अड़चन के सुचारू रूप से चलती है। जिस स्थान पर वाद्य यंत्र का निर्माण किया जाता है उसे पहले से ही संयोजित और शुद्ध किया जाता है। इसके अलावा पूरी विधि को नंगे पांव किया जाता है । कुछ कड़े नियम भी हैं। जैसे न तो निर्माणकर्ता पूरी प्रक्रिया के समय बातचीत कर सकता है और न ही कार्य पूरा होने तक भोजन ग्रहण कर सकता है । यदि निर्माता के परिवार या आस -पड़ोस में किसी का देहांत हो जाए तो कार्य निलंबित कर दिया जाता है । शुद्धि के बाद ही कार्य फिर से शुरू किया जाता है। स्थान की पवित्रता गौमूत्र या गंगाजल छिड़क कर की जाती है । इसके उपरांत ही कार्य फिर से शुरू कर दिया जाता है ।

## गुज्जू वाद्य का निर्माण

गुज्जू वाद्य यंत्र के निर्माण में लकड़ी तथा चमड़े का उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें रस्सी का उप्रयोग भी होता है। लकड़ी का एक सूखा हुआ टिकाऊ बड़ा सा टुकड़ा प्रयोग में लिया जाता है और उसी में छेद करके इसे निर्धारित आकार प्रदान किया जाता है । इसके पश्चात बकरे के चमड़े से दोनों ओर से इस वाद्य को मढ़\ढक दिया जाता है। कई अवसरों गुज्जू वाद्य के खोल को चांदी से भी मढ़ दिया जाता है। जिससे यह बहुत ही आकर्षक दिखाई देता है। इस पर चमड़े को दोनों ओर से रस्सी के द्वारा कस दिया जाता है ताकि निर्धारित कसाव प्राप्त हो सके। गुज्जू वाद्य को गले से लटकाने के लिए इसमें एक कपड़े या सूत की पतली रस्सी का इस्तेमाल किया जाता है।

## गुज्जू वाद्य बनाने के लिए आवश्यक सामग्री और निर्माण प्रक्रिया

### कार्यशाला

यह स्थान वाद्य-निर्माण की एक विशेष कार्यशाला (शिल्पशाला) होती है, जहाँ विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्रों का पूर्ण निर्माण अत्यंत कुशलता और सावधानी के साथ किया जाता है। इस कार्यशाला में अनुभवी कारीगर अपनी पारंपरिक कला, ज्ञान और तकनीकों का उपयोग करके वाद्य यंत्रों को आकार देते हैं, उन्हें तराशते हैं तथा उनकी ध्वनि की गुणवत्ता को संतुलित करते हैं। यहाँ वाद्य निर्माण की पूरी प्रक्रिया—कच्चे माल के चयन से लेकर अंतिम रूप देने तक—संगठित रूप में सम्पन्न होती है। लकड़ी, धातु, चमड़ा तथा अन्य आवश्यक सामग्रियाँ सुव्यवस्थित ढंग से संग्रहित की जाती हैं। साथ ही, निर्माण के बाद वाद्य यंत्रों के रख-रखाव, मरम्मत और ध्वनि-संतुलन (ट्यूनिंग) के लिए आवश्यक सभी उपकरण और सामग्री भी इसी स्थान पर उपलब्ध रहती हैं। इस कार्यशाला का सबसे महत्वपूर्ण गुण यह है कि यह सिर्फ निर्माण नहीं बल्कि ज्ञान और परंपरा का भी केंद्र है। यहाँ शिक्षक अपने विद्यार्थियों को वाद्य निर्माण के विभिन्न नियम सिखाते हैं, जैसे लकड़ी को सही तरह से चुनना, उचित आकार देना और ध्वनि को स्वच्छ रखना। इस तरह, कला एक सांस्कृतिक विरासत बन जाती है और सिर्फ एक तकनीकी प्रक्रिया बन जाती है। वाद्य निर्माण की यह परंपरा इसी तरह पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती रहती है। कारीगर अपने पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान को संजोकर रखते हैं और उसे नई पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं, जिससे कला समय के साथ सुरक्षित और अधिक समृद्ध रहती है।

### छड़ी

इसे "काठी" भी कहा जाता है। यह इसका निर्माण लकड़ी से किया जाता है। इसे बनाने में जिस लकड़ी का उपयोग किया जाता है वह चाकू/चकु नामक पेड़ की होती है। यह लकड़ी पतली और आगे से थोड़ी मुड़ी हुई होती है। यह 8 इंच या उससे ज्यादा लम्बी होती है। गुज्जू वाद्य के खाल वाले भाग का इसी लकड़ी से वादन किया जाता है और दूसरी तरफ मध्यमा उंगली का प्रयोग किया जाता

है। लकड़ी प्राप्त करने के लिए पेड़ को तेज औजार की मदद से काटा जाता है जिसे स्थानीय भाषा में "दराट" कहा जाता है। गुज्जू बजाते समय रेडूं रेडूं की ध्वनि उत्पन्न होती है जो श्रोता को  बहुत ही मधुर तथा आकर्षक  लगती है।

**चकू**

स्थानीय भाषा में इस पेड़ को 'चकू' कहा जाता है। इस पेड़ की लकड़ी से ही गुज्जू नामक वाद्ययंत्र के वादन के लिए लकड़ी ली जाती है। यह पेड़ छोटे- छोटे  होते हैं जो पहाड़ी क्षेत्रों में जगह-जगह आसानी से प्राप्त हो जाते हैं। इसकी लकड़ी बारीक होती है जिसको 'दराट' या दराटी' से काटा जाता है और उसी से इसे आकर दिया जाता है।

**लकड़ी**

इसका इस्तेमाल  गुज्जू की  मुख्य संरचना  बनाने के लिए किया जाता है। गुज्जू के लिए लकड़ी "रीखल" या "शीशम" और कुछ कारीगर स्थानीय भाषा में पाए जाने वाला वृक्ष जिसे स्थानीय लोग बेसु के नाम से जानते है। इन पेड़ों की लकड़ियाँ इस्तेमाल में लाई जाती  है। रीखल एक प्रकार की वृक्ष वनस्पति है जो अपेक्षाकृत कम तापमान वाले या बर्फीले क्षेत्रों में ही ज्यादातर  पाई जाती है तथा बेसु नामक पेड़ की लकड़ी मैदानी तथा पहाड़ी दोनों जगह पर पाए जाते है। इस वृक्ष की लकड़ी काफी टिकाऊ होती  है। शीशम के वृक्ष ज़्यादातर मैदानी इलाकों में या नदियों के किनारों पर पाए जाते है। शीशम कि लकड़ी बहुत टिकाऊ होती है इसका उपयोग अन्य वाद्य यंत्रों के निर्माण में भी किया जाता है जैसे सितार,तानपूरा तबला इत्यादि। इन वृक्षों का आकार काफी बड़ा होता है। इनमें से  रीखल के पेड़ का इंसानों और जानवरों से संपर्क बेहद भयानक माना जाता है। क्योंकि इस पेड़ के एक मात्र संपर्क से ही प्राणियों की त्वचा छूटने का खतरा हो सकता है।

इस पेड़ का उपयोग क्षेत्रों में एक तरह से वर्जित्  है। इसका इस्तेमाल ईंधन के रूप में भी नहीं किया जाता। प्रतिबंध का कारण यह है कि इसे जलाने पर हानिकारक गैस उत्पन्न होती  हैं। रीखल के पेड़ पर न तो फल लगते हैं और न ही फूल। परंतु शीशम के वृक्ष पर फल तो लगते हैं लेकिन वह खाने योग्य नहीं होते हैं यह वृक्ष मनुष्य तथा जानवरों के लिए नुकसान दायक नहीं होता है। रीखल के पेड़ का उपयोग इतना नुकसानदायक है तो मनुष्य इससे संगीत वाद्ययंत्र कैसे बनाते हैं? उत्तर है पेड़ से गिरी हुई लकड़ियों को सुखाना। जब पेड़ से कुछ लकड़ी स्वयं गिर जाती है तो इन्हें कुछ समय वहीं सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। गुज्जू बनाने के लिए केवल सूखी लकड़ियों का इस्तेमाल  ही करते है। शीशम का वृक्ष मनुष्य तथा जानवरों के लिए नुकसान दायक नहीं होता है

**खोखा: ढांचा**

गुज्जू वाद्य का मध्य भाग खाली या खोखला होता है और इस खाली लकड़ी से बने हुए भाग को 'खोखा' कहा जाता है। यह लकड़ी ठंडे क्षेत्रों में पाई जाती है। इस  खोखे की परिधि लगभग  7 इंच होती है तथा दोनों तरफ से खोखला होता है। खोखे  को दोनों ओर से बराबर तथा बीच में बारीक कर दिया जाता है और एक रेखा दे दी जाती है तथा उसमें एक छेद भी किया जाता है जिससे ध्वनि अच्छी उत्पन्न होती है। खोखे में केवल एक ही छेद होता है। 'रीखल' नामक वृक्ष की लकड़ी से खोखा तैयार करने में काफी अधिक समय लगता है। यह कार्य एक कुशल शिल्पकार  द्वारा ही मुमकिन हो सकता है। पहले रीखल लकड़ी को जंगल से लाया जाता है फिर वह सुखाया  जाता  है और उस लकड़ी के बीचों बीच में 'नैण' नामक उपकरण से आघात किया जाता है और क्रमिक रूप से खोखला कर दिया जाता है। उसके उपरांत इसे अच्छी प्रकार साफ किया जाता है और बाहरी व्यर्थ हिस्से को निकाल कर उसे निर्धारित आकृति दी जाती है। इसकी बाहर की मोटी परत को एक औजार से निकाल लिया जाता है जिस औजार को 'बैहली' कहते हैं। उसके बाद खोखे  को सुंदर व मनमोहक  बनाने के लिए इसमें ज्यादातर काला रंग किया जाता है। इस खोखे में दोनों ओर से चमड़ा मढ़ दिया जाता है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320-7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

**रस्सी**

इसे स्थानीय भाषा में लोग "दाऊन" भी कहते है । दाऊन सूखे ‘शेलह’ से बनाया जाता है । शेलह भांग के सूखे पेड़ से “बीउल” नामक पेड़ की टहनियों से प्राप्त होने वाले ‘शेलह’की सहायता से बनाया जाता है। यह रस्सी बहुत ही पक्की व टिकाऊ होती है। इस रस्सी में शिवरात्रि के समय ‘कुपु’ तथा ‘पाजा’ (दो प्रकार के पेड़) की लकड़ी बांधकर उसकी पूजा की जाती है। इसे स्थानीय भाषा में कई जगह ‘साई’तथा कई जगह ‘चंदोह’ कहा जाता हैं जिसे भगवान शिव का प्रतीक माना जाता है।

**खाल**

स्थानीय भाषा में इसे "पूड़ा" भी कहा जाता है । इसे बकरी की खाल से बनाकर उपयोग में लाया जाता है । गुज्जू के दोनों तरफ बनाने के लिए केवल एक ही बकरी की खाल का इस्तेमाल किया जाता है यदि ऐसा नहीं किया गया तो ध्वनि की गुणवत्ता दोनों पूडो में भिन्नता पाई जाए। गुज्जू वाद्य पर बकरी की खाल लगाने से पहले इसे कम से कम दो दिन तक भिगोकर रख दिया जाता है । सही ढंग से न भिगोने पर बकरी की खाल फटने लगती है और इसे वाद्य पर आसानी से लगाया नहीं जा सकता । खाल लगभग 7 इंच लम्बाई तथा इससे अधिक की होती है। बाद में अतिरिक्त खाल को आवश्यकतानुसार ब्लेड की सहायता से काट दिया जाता है

**रीरा**

यह मूलतः खाल के लिए एक ढांचा है। खाल का बाहरी भाग ‘रीरा’ द्वारा सुरक्षित कर दिया जाता है। खाल को कई रंध्रों के माध्यम से रीरा से जोड़ दिया जाता है । इन रंध्रों की संख्या 7 होती है। अतः रीरा में कुल 14 छेद किये जाते हैं, 7 दायीं ओर और 7 बायीं ओर। स्थानीय भाषा में इन रंध्रों को "सीह" कहकर पुकारा जाता है। यह रंध्र खाल में बनाए जाते हैं।

**कड़ा**

यह पीतल नामक धातु से बनाया जाता है । इन कड़े का निर्माण कार्य सुनार को दिया जाता है । स्थानीय भाषा में इसे "पीपली"कहकर भी पुकारा जाता है। यह आकार में गोलाकार होता है तथा इसे ‘रीरा’ से बांध दिया जाता है। इसे बांधने के कारण गुज्जू वाद्ययंत्र की रस्सी कभी ढीली-ढाली नहीं पड़ती है। यह संख्या में 3 होते हैं। एक कड़े से रस्सी तंग कर दी जाती है तथा गर्दन से जो रस्सी लटकाई जाती है उसमें दो कड़ों को बांध दिया जाता है।

## गुज्जू वाद्य को बनाने में प्रयुक्त होने वाले औज़ार तथा उपकरण

**खराद**

यह एक लकड़ी के टुकड़े को घुमाकर काम करती है। अपनी सटीकता, बहुमुखी प्रतिभा और दक्षता के कारण, खराद मशीनों का व्यापक रूप से कार्यशालाओं में उपयोग किया जाता है। खराज मशीन में लकड़ी के टुकड़े को फंसा कर अलग-अलग उपकरणों के माध्यम से उसे सही आकार दिया जाता है तथा बीच में से फालतू लकड़ी को हटाकर खोखला किया जाता है।

**नैणी/ नैण**

इसका इस्तेमाल वाद्य यंत्र में प्रयोग होने वाली लकड़ी को काटने में किया जाता है। यह दो भागों से बना है: लोहे और लकड़ी। लोहे की धातु का अग्र भाग और लकड़ी का हैंडल पीछे का हिस्सा है। इसका आकार 10 इंच से कम और कभी-कभी इससे थोड़ा ज्यादा भी होता है।इस उपकरण का इस्तेमाल  छिद्रों के निर्माण में भी किया जाता है।

**बौल**

यह उपकरण पूरी तरह से लोहे से निर्मित है। इसका आकार पीछे से गोल है, लेकिन सामने आते ही यह चपटा और खोखला हो जाता है। यह लगभग 9 इंच का है।

**छोटा बौल**

यह उपकरण आकार में छोटा होता है, लेकिन लगभग बड़े बौल की तरह ही होता है

**बड़ा बोसोला**

यह उपकरण लकड़ी और लोहे दोनों से निर्मित है। इस उपकरण का अग्र भाग लोहे की धातु से निर्मित है तथा पीछे का भाग लकड़ी से निर्मित होता है। स्थानीय भाषा में लोग इसे "बैहली" कहते  है। स्थानीय लोग इस उपकरण का उपयोग रोजमर्रा के जीवन में भी करते है।

**छोटा बोसोला**

यह उपकरण अधिकतर खराद साफ करने हेतु इस्तेमाल में लाया जाता है। इसका आकार छोटा होने के बावजूद भी यह बड़े बोसोले की तरह कार्य करता है।

**बोलतरी**

स्थानीय भाषा में इस उपकरण को बोलतरी के नाम से जाना जाता है इसके चार प्रकार होते है जिसे 1,2 3 व 4 नंबर से जाना जाता है इस उपकरण का इस्तेमाल खराद का कार्य करते समय गुज्जू वाद्य यंत्र के ढांचे को आकार देने के लिए किया जाता है।

**रेती**

यह उपकरण लोहे और लकड़ी से बना होता है इसकी लंबाई लगभग 9 – 10 इंच होती है इसका अग्र भाग लोहे का तथा पीछे का भाग यानि कि हैंडल लकड़ी का होता है इसकी सतह खुरदरी होती है जिससे वाद्य यंत्र के ढांचे में यदि कोई भाग खराद का कार्य हो जाने के उपरांत रह जाता है तो उस भाग को रेती कि सहायता से बराबर किया जाता है और वाद्य यंत्र का ढांचा देखने में आकर्षक बन जाता है।

**झीमटी**

यह उपकरण लकड़ी से निर्मित होता है। इस उपकरण का इस्तेमाल गुज्जू वाद्य यंत्र के पूड़े में डोरी को आर पार किए जाने के लिए किया जाता है या आसान भाषा में यूं कहे कि इसका कार्य लगभग सुई जैसा होता है। इसकी सहायता से पूड़े को ढांचे से जोड़ा जाता है तत्पश्चात ही वाद्य यंत्र वादन करने योग्य होता है। इसे स्थानीय भाषा में झीमटी कहा जाता है।

**पेचकस**

यह उपकरण लकड़ी से निर्मित होता है। इस उपकरण का उपयोग वाद्य यंत्र में स्वर स्थापित करने तथा वाद्य यंत्र के निर्माण के दौरान भी इसका इस्तेमाल किया जाता है।

**हथोड़ा**

यह उपकरण लकड़ी से निर्मित होता है। इस उपकरण का उपयोग वाद्य यंत्र में स्वर स्थापित करने तथा वाद्य यंत्र के निर्माण के दौरान भी इसका इस्तेमाल किया जाता है।

## उपसंहार

हिमाचल प्रदेश के पारंपरिक लोक संगीत में लोक वाद्यों का अपना विशेष महत्व है, जिसमें एक प्रमुख वाद्य है गुज्जू। इस वाद्य को विशेष धार्मिक अवसरों पर या मांगलिक अवसरों पर बजाया जाता है। इस वाद्य की निर्माण पद्धति अपने आप में बहुत ही जटिल तथा परिश्रम साध्य है। पीढ़ी दर पीढ़ी सिखाते हुए स्थानीय कारीगर इस वाद्य को, स्थानीय उपलब्ध सामग्री, जैसे लकड़ी, चमड़ा इत्यादि की सहायता से बनाते हैं। इस वाद्य का संबंध भगवान शिव के साथ जोड़ा जाता है। इस वाद्य की आवाज डमरू की तरह लगती है परंतु लगातार बजाने वाली दऊं फुकु की आवाज इसे डमरू से अलग करती है। इस वाद्य को बनाने वाले कलाकार तथा बजने वाले कलाकार आज बहुत ही काम रह गए हैं और अगर समय पर इन्हें सुरक्षित नहीं किया गया तो यह लुप्त होने के बहुत ही समीप है।

## संदर्भ

टैगोर, एस.एम.(1986). यूनिवर्सल हिस्टरी, ऑफ म्यूजिक, मित्तल पब्लिकेशन, दिल्ली।
ठाकुर, हरदीप. (2009). देव भूमि हिमाचल प्रदेश, जे.एम.डी. पब्लिशर्ज़, समरहिल, शिमला।
परांजपे, डॉ. श्रीधर शरच्चन्द्र. (1975). संगीत बोध, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
शर्मा, राजीव (2019). हिमाचल प्रदेश के अवनद्ध वाद्य तथा वादन शैलियां. सत्यम पब्लिकेशन्ज, दिल्ली
जस्टा, हरिराम (1978). हिमाचल प्रदेश के लोक नृत्य, संमार्ग प्रकाशन दिल्ली।
ठाकुर, सूरत (1996). हिमाचल प्रदेश के लोक वाद्य, अभिषेक पब्लिकेशन्ज, दिल्ली।

## साक्षात्कार

ड़ॉ. राजीव शर्मा, कोटला, सोलन। 21 अप्रैल 2026।
श्री ठाकुरसेन, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश। 27 फरवरी 2026।
श्री मस्तराम, शैंदल, करसोग, मंड़ी, हिमाचल प्रदेश। अक्टूबर 2025 से अप्रैल 2026
श्री राजेश, बाड़ीधार, अर्की, सोलन, हिमाचल प्रदेश। 13 मार्च 2026।
श्री विक्रांत शर्मा, शिमला, हिमाचल प्रदेश 2 अप्रैल 2026